राणा प्रताप और अकबर

ललित मोहन चतुर्वेदी
प्रो० (डॉ०) नारद सिंह

1567 ई० के अभियान में अकबर मेवाड के केवल पूर्वी भाग पर ही अधिकार कर पाया था। पश्चिमी मेवाड़ पर अभी उसका आधिपत्य नहीं हो पाया था। चित्तौड़ के पतन के बाद उदयसिंह के बेटे प्रतापसिंह ने साढ़े चार वर्ष यहाँ–वहाँ बिताए। फिर फरवरी 1572 ई० में उदयसिंह की मृत्यु होने पर मेवाड़ के सामंतों ने मेवाड़ की तत्कालीन राजधानी कुम्भलगढ़ में प्रताप का राज्याभिषेक किया।

मेवाड़ के शेष भाग को अधिकृत करने के लिए अकबर का जो संघर्ष प्रताप से आरम्भ हुआ, वह भारत के इतिहास में अतुलनीय है। एक ओर एक साधन सम्पन्न सम्राट की साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा थी, तो दूसरी ओर अपनी मातृभमि की स्वतंत्रता की रक्षा करने का संकल्प था। टाड के शब्दों में, 'प्रताप ने चित्तौड़ को फिर पाने, अपने वंश के गौरव को पुनर्स्थापित करने तथा उसकी शक्ति को फिर से स्थापित करने का संकल्प किया।'[1]

इस संघर्ष में प्रताप का साथ देने वाले कुछ और राज्य थे जैसे मारवाड़, बूँदी, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, ईडर और सिरोही।